ISWK SHARING KNOWLEDGE

Class -VI
Subject- Hindi Second Language
Topic- वह चिड़िया जो (कविता)

By-Anu Bala

वह चिड़िया जो(कविता)

कवि - केदारनाथ अग्रवाल

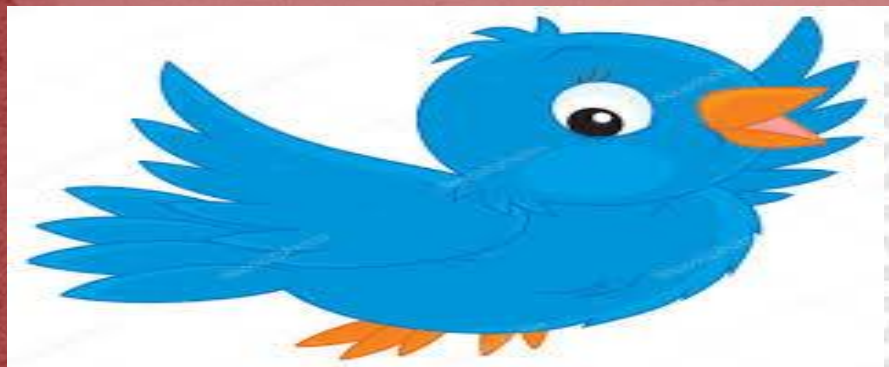

1. वह चिड़िया जो

वह चिड़िया जो–
चोंच मारकर
दूध–भरे जुंडी के दाने
रुचि से, रस से खा लेती है
वह छोटी संतोषी चिड़िया
नीले पंखोंवाली मैं हूँ
मुझे अन्न से बहुत प्यार है।

जुंडी (ज्वार – बाजरे की बालियाँ – maize -millet रस –स्वाद taste
संतोषी- धीरजवाली - patience
अन्न – अनाज- grain

व्याख्या- इस कविता में एक छोटी सी नीले पंखों वाली चिड़िया अपना परिचय दे रही है।
नीली पंखों वाली चिड़िया कहती है कि वह दूध से युक्त अर्थात अधपके जुंडी (ज्वार - बाजरा)के दाने मन से और स्वाद लेकर खाती है। वह संतोषी है , थोड़े- से दाने ही उसके लिए काफी हैं | उस चिड़िया के पंख नीले रंग के हैं , उसे अनाज से बहुत प्यार है। प्रस्तुत पंक्तियाँ हमें अन्न से प्रेम और आदर करने की सीख देती हैं क्योंकि अन्न हमें ताकत देकर जीवन प्रदान करता है।

वह चिड़िया जो

वह चिड़िया जो–
कंठ खोलकर
बूढ़े वन–बाबा की खातिर
रस उँडेलकर गा लेती है
वह छोटी मुँह बोली चिड़िया
नीले पंखोंवाली मैं हूँ
मुझे विजन से बहुत प्यार है।

कंठ – गला -throat
वन –जंगल –forest,
रस उँडेलकर – बहुत ही मीठे स्वर में, in a very sweet voice
मुहँबोली -**चिर-परिचित** so called , adopted
विजन – **एकांत , सुनसान** - lonly

नीले पंखों वाली चिड़िया कहती है कि तेज़ और मधुर (मीठे) स्वर में गाने वाली चिड़िया मैं ही हूँ | मैं सभी की चिर-परिचित अर्थात जानी - पहचानी हूँ। मेरे सभी गीत बूढ़े बाबा के लिए हैं। मैं एकांत से बहुत प्यार करती हूँ | मानव स्वभाव रूपी यह चिड़िया प्रकृति से प्रेम करने तथा एकांत में भी प्रसन्न रहने का संदेश देती है ।

वह चिड़िया जो

वह चिड़िया जो–
चोंच मारकर
चढ़ी नदी का दिल टटोलकर
जल का मोती ले जाती है
वह छोटी गरबीली चिड़िया
नीले पंखोंवाली मैं हूँ
मुझे नदी से बहुत प्यार है।

चढ़ी नदी - उफ़नती हुई नदी – जल से भरी हुई नदी , flooded river
टटोलकर – खोजकर in the search of
गरबीली-गर्वीली , proudly

नीले पंखोंवाली चिड़िया कहती है कि मैं वही छोटी चिड़िया हूँ जो उफ़नती नदी में से भी पानी की मोती रूपी बूँद अपनी चोंच में लेकर उड़ जाती हूँ | मुझे अपने इस साहसपूर्ण कार्य पर बहुत गर्व है | मुझे नदी से भी बहुत प्यार है | उपर्युक्त पंक्तियों में चिड़िया विपरीत परिस्थितियों में भी हिम्मत ना हारने की प्रेरणा देती है | यह नदी से प्रेम करने का संदेश देती है क्योंकि नदियाँ सभ्यता के विकास में प्राचीन काल से ही हमारी सहायक रही हैं।

शब्दार्थ

जुंडी - ज्वार – बाजरे की बालियाँ – Maize - millet

रस –स्वाद taste

संतोषी- धीरजवाली - patience

अन्न – अनाज- grain

कंठ – गला -throat

वन –जंगल –forest,

रस उँडेलकर – बहुत ही मीठे स्वर में, in a very sweet voice

विजन – एकांत , सुनसान - lonely – a quite place

चढ़ी नदी - उफ़नती हुई नदी – जल से भरी हुई नदी , flooded river

टटोलकर – खोजकर in the search of

गरबीली-गर्वीली , proudly

****

अति लघु उत्तरीय प्रश्न -

पाठ – 8 - वह चिड़िया जो

प्रश्न 1- यह कविता चिड़िया के माध्यम से क्या सीख देती है ?

उत्तर - यह कविता चिड़िया के माध्यम से प्रेम और उमंग से जीने की सीख देती है |

प्रश्न 2 - चिड़िया किसकी खातिर गाती है ?

उत्तर - चिड़िया बूढ़े वन-बाबा के खातिर गाती है |

प्रश्न 3 - चिड़िया के पंख कैसे हैं ?

उत्तर - चिड़िया के पंख नीले हैं |

प्रश्न 4- चिड़िया कौन - से मोती ले जाती है ?

उत्तर - चिड़िया जल के मोती ले जाती है |

प्रश्न 5 - चिड़िया कैसे गाती है ?

उत्तर - चिड़िया कंठ खोलकर गाती है |

लघु उत्तरीय प्रश्न –

प्रश्न 6 - चिड़िया को किससे प्यार है और क्यों ?
उत्तर-चिड़िया को अन्न से प्यार है | वह दूधिया एवं अधपके जुंडी के दाने बड़े चाव से खाती है | उसे विजन से प्यार है | वह एकांत वन में मधुर स्वर में गाती है, उसे नदी से प्यार है वह नदी की बीच धारा से जल की बूँदें चोंच में लेकर उड़ जाती है |

प्रश्न 7 – कविता में कैसी चिड़िया का वर्णन है?
उत्तर- कविता में नीले पंखों वाली छोटी- सी चिड़िया का वर्णन है | वह संतोषी है , थोड़ा अन्न उसके लिए काफ़ी हैं | वह मुहँबोली है | उसे एकांत पसंद है | अपने साहस पर उसे गर्व है |

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

प्रश्न 8 - कविता के अनुसार चिड़िया का कैसा चित्र आपके मन में उभरता है?
उत्तर- 'वह चिड़िया जो' कविता को पढ़कर हमारे मन में चिड़िया का यह चित्र उभरता है –

i चिड़िया के पंख चमकीले , नीले और सुंदर हैं |
ii चिड़िया का आकार छोटा है |
iii वह जंगल में गीत गाती है |
iv वह खेतों में अन्न खाती है |
v वह नदी का पानी पीती है |

प्रश्न 9 - चिड़िया ने स्वयं को गर्वीली क्यों कहा है ?
उत्तर- चिड़िया ने स्वयं को गर्वीली इसलिए कहा है क्योंकि वह जंगल में अकेली रहकर अपना जीवन व्यतीत करती है उसे एकांत पसंद है | वह स्वयं ही अपना भोजन जुटाने निकल पड़ती है | जब उसे प्यास लगती है तब वह तीव्र वेग वाली नदी से जल भरकर पीती है | वह अपनी सारी आवश्यकताएँ स्वयं ही पूरी कर लेती है |हृदय

वह चिड़िया जो - व्याकरण भाग

Grammar - पर्यायवाची, विलोम, वाक्य शुद्धि , मुहावरे

प्रश्न 1 - निम्नलिखित शब्दों से दो- दो पर्यायवाची बनाइए:-

1 - कहानी - कथा , गाथा

2 - शत्रु - वैरी , दुश्मन

3 - हाथी - गज , नाग

4 - वायु - हवा , समीर

5 - प्यार - प्रेम , स्नेह

6 - नदी - सरिता , तटिनी

7 - दिल - हृदय , कलेजा

प्रश्न- 2 निम्नलिखित शब्दों के विलोम लिखिए:-

1 - काला – सफ़ेद

2 - आदि – अंत

3 - गरमी – सरदी

4 - हिंसा - अहिंसा

5 - जन्म –मृत्यु

6 - मान - अपमान

7 - विश्वास - अविश्वास

प्रश्न -3-निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कर के फिर से लिखिए :-

1 - क्या बच्चे पढ़ रहे हैं किताब ?

उत्तर:- क्या बच्चे किताब पढ़ रहे हैं ?

2 - मैंने आज अखबार पढ़ना भूल गया।

उत्तर:- मैं आज अखबार पढ़ना भूल गया।

3 - घोड़े के पास चार पैर होते हैं।

उत्तर:- घोड़े के चार पैर होते हैं।

4 - बच्चे छत में खेल रहे हैं ।

उत्तर:- बच्चे छत पर खेल रहे हैं ।

5 - क्या एक गर्म कप कॉफी मिल सकती है?

उत्तर:- क्या एक कप गर्म कॉफी मिल सकती है?

6 - तुम तुम्हारी किताब पढ़ो।

उत्तर:- तुम अपनी किताब पढ़ो।

7 - वह हिमालय पहाड़ पर चढ़ गया ।

उत्तर:- वह हिमालय पर चढ़ गया ।

प्रश्न -4 - निम्नलिखित मुहावरों को वाक्यों में प्रयोग कीजिए:-
1- नीचा दिखाना – (अपमानित करना) – राम सदा दूसरों को नीचा दिखाता रहता है,उसकी यह आदत किसी को भी पसंद नहीं है ।
2 - आसमान सिर पर उठाना –(बहुत शोर करना)- अध्यापिका के कक्षा से जाते ही छात्रों ने आसमान सिर पर उठा लिया।
3 - जी चुराना- (काम में मन न लगाना)- जो लोग काम से जी चुराते हैं, कभी सफ़ल नहीं हो पाते ।
4 - गले का हार- (बहुत प्रिय) – बच्चे माता – पिता के गले का हार होते हैं ।
5 - अपने पैरों पर खड़े होना (आत्म निर्भर होना) मेहनत करके ही हम अपने पैरों पर खड़े हो सकते हैं ।
6 - कान पकड़ना - (गलती मानना)- गलती हो जाने पर , जसलीन ने कान पकड़कर माफ़ी माँगी ।